सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का प्रयोग एवं महत्व

अंजु चौधरी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की।

मानव एक समाजशील प्राणी है। समाज के अभाव में मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह समाज में रह कर एक दूसरे के साथ विचार विनिमय करते हुए अपना एवं अपने समाज का विकास करता है। किसी भी समाज के निर्माण में संचार की विशेष भूमिका है। मानव की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के स्थानांतरण की प्रक्रिया में संचार का विशेष योगदान है। आदि काल से मानव संचार के लिए नए–नए तरीके खोजने हेतु प्रयासरत रहा है। जब तक भाषा का विकास नहीं हुआ था वह संकेतों के माध्यम से अपने विचार संप्रेषित करता रहता था। जैसे ही भाषा का उद्‌भव हुआ तो विचारों एवं सूचनाओं के लिए पत्रों एवं दूतों का सहारा लिया जाता था। जैसे–जैसे विज्ञान का विकास हुआ सम्प्रेषण के नए–नए मार्ग खोजे गए। सम्प्रेषण के माध्यमों के द्वारा विकास में पहला कार्य समाचार पत्रों के माध्यम से किया गया फिर रेडियो आया इसके बाद भारत में सत्तर की दशक में दूरदर्शन का जन्म हुआ। दूरदर्शन ने सम्प्रेषण को नया रूप दिया। भाषा के प्रसार में दूरदर्शन ने एक अहम् भूमिका निभाई। सूचनाएं एवं मनोरंजन देश के कोने–कोने तक पहुंचने लगा। आधुनिक युग में तकनीकी विकास में तेजी से क्रांति आई है जिसके कारण आम आदमी की गतिविधियों में बदलाव आया है। जिन्दगी की तेज रफ़्तार के दौर में व्यक्ति को बाह्य जगत से जुड़ने हेतु ऐसे माध्यम की आवश्यकता हुई जो सरल सुगम होने के साथ–साथ सर्वव्यापी, सर्वसमय, सर्वत्र एवं सर्वसुलभ होने के साथ–साथ सस्ता एवं प्रभावी हो। मनुष्य की इस आवश्यकता ने जन्म दिया इंटरनेट को। इंटरनेट के विकास के बाद सोशल मीडिया सूचना क्रांति के नवीनतम साधन के रूप में विकसित हुई। आजकल फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सऐप्प, यूट्यूब लिंक्ड इन, स्नेप चैट, टम्ब्लर, ब्लोगिंग एवं वी चैट इत्यादि कई सोशल मीडिया चलन में आए हैं।

सोशल मीडिया एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से अपने उपयोगकर्ता को संवाद स्थापित करने की सुविधा प्रदान करती है। उपयोगकर्ता आमतौर पर इस माध्यम का प्रयोग करने के लिए डेस्कटॉप, कंप्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट एवं मोबाईल फोन पर आधारित प्रौद्योगिकियों के माध्यम से सोशल मीडिया की सेवाओं का उपयोग करते हैं। पिछले कुछ दशको में सोशल मीडिया भारतीय किशोरों के बीच ही नहीं अपितु पुरानी पीढ़ी के बीच भी काफी लोकप्रिय हुआ है। आम जनता को अपने परिचितों एवं समाज के मध्य वार्तालाप स्थापित करने की इसकी अदभुत क्षमता के कारण धीरे–धीरे यह जन–जन तक पहुंच रहा है। पहले इसका प्रयोग करने में भाषा की जो बाध्यता थी हिंदी भाषा के प्रयोग ने वह भी दूर कर दी है। इस मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषी हिंदुस्तानी जहां व्हाट्सऐप्प के जरिए एक दूसरे से वार्तालाप कर सकता है वहीं यू ट्यूब के जरिए कई विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। लिंक्ड इन आम आदमियों को रोजगार तलाशने में मदद कर रहा है। ब्लोगिंग ने अपने उपयोगकर्ता को उसके विचारों की अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान किया हैं सोशल मीडिया की इन्हीं खूबियों के चलते आम जनता में इस मीडिया की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020 तक इसके उपभोक्ताओं की संख्या 3,150 लाख मिलियन तक पहुंचने की सम्भावना है समाज को जगाने में मीडिया हमेशा से ताकतवर रहा है। नैपोलियन के अनुसार "लाखों संगीने मेरे भीतर वह डर पैदा नहीं करती जो तीन अखबार करते हैं।

शहरी जीवन की तरह ही ग्रामीण जीवन के विकास हेतु उन्हें तकनीक से जोड़ना आज के दौर की मांग है। भारत में अभी भी सबसे ताकतवर भाषा हिंदी है। हिंदी साहित्य में आस्था एवं पूजा का भाव पर्याप्त मात्रा में है। आधुनिक युग की मांग है की इसे तर्क एवं तथ्य के साथ शोध एवं ज्ञान की भाषा में परिवर्तित किया जाए। सामाजिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए केवल सूचना साझा

करना पर्याप्त नहीं अपितु इसे सूचना की कसौटी पर कसना अत्यंत आवश्यक है। चार्ल्स लीद बिटर के अनुसर ''यू आर व्हाट यू शेयर'' इसके लिए भाषा की जो बाधा है उसे दूर करने के लिए हिंदी का विकास अति आवश्यक है। भाषा सम्प्रेषण का महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान समय में हिंदी ऐसी भाषा है जो भारत के अधिकतर भाग में बोली, समझी एवं लिखी जाती है। वर्तमान में ग्रामीण जनता का केवल 10 प्रतिशत लोग ही इन तकनीकों से जुड़े हैं। भारत के कोने–कोने से जन–जन को जोड़ने तथा उन तक लाभप्रद सूचना पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

सोशल मीडिया एवं हिंदी

हिंदी न सिर्फ राजभाषा है बल्कि भारतीयों के लिए एक सशक्त संचार माध्यम है। वैश्वीकरण के इस दौर में अंग्रेजी चाहें जितनी ताकतवर हो पर उसका कार्य भारत में बिना हिंदी के नहीं चल सकता यही कारण है मोबाइल कंपनियों ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध कराई है। आज हिंदी राजनीति, मनोरंजन एवं विज्ञापनों की प्रमुख भाषा बन गयी है। डिजिटल समय के दौर में हिंदी का स्वरूप भी बदला है। फेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया ने नवोदित हिंदी के साहित्यकारों को अपनी रचनाओं को पाठकों तक द्रुतगति से पहुंचने का कार्य किया है। आज फेसबुक पर कई साहित्यिक पेज जैसे हिंदी पत्रिका पेज, हिंदी कविता पेज एवं हिंदी समीक्षा पेज इत्यादि जहां पर समकालीन हिंदी प्रेमियों को रचनाएं एवं समीक्षाएं देखी जा सकती हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग बढ़ने के तीन महत्वपूर्ण कारण है।

1. **हिंदी का तकनीकी विकास**–भारत की कई तकनीकी संस्थाओं जैसे सी डेक आदि ने भाषा प्रयोग की दिशा में काफी अनुसंधान किए हैं, जिसके फलस्वरूप हिंदी लेखन की जटिलता, फोन्ट की समस्या, की–बोर्ड में भाषा परिवर्तन एवं अनुवाद के सॉफ्टवेयर ने कई समस्याओं का निवारण किया है।
2. **बाजारवाद का दबाव**–प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अनेक कंपनिया भाषा के आधार पर बाजार नियोजित कर रही हैं सभी ई–मेल प्रोवाईडर और सोशल नेटवर्किंग साइट्स हिंदी में लिखने की सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं।
3. **हिंदी एवं सहयोगी भाषा से आम जनता का जुड़ाव**–घरों में, सांस्कृतिक आयोजनों में, उत्सवों में एवं भावनाओं को व्यक्त करने में अधिकतर भारतीय हिंदी या अन्य देश भाषाओं का प्रयोग करते हैं। सोशल मीडिया जैसा प्रभावी माध्यम मिलने से आम जनता द्वारा हिंदी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

ट्वीटर पर रवीश कुमार जैसे पत्रकार का शान के साथ यह लिखना कि ''हमें अच्छी अंग्रेजी नहीं आती'' तथा वर्तमान प्रधान मंत्री नेरन्द्र दामोदर दास मोदी एवं अनेक केंद्रीय मंत्रालयों का अपने सोशल मीडिया अपडेट हिंदी में देना इस बात का प्रतीक है कि हिंदी का संसार धीरे–धीरे विस्तृत हो रहा है। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग करने वालों में भारत के हिंदी भाषी राज्यों के लोग ही नहीं अपितु दुनिया भर में अनेक देशों यथा अमेरिका, रूस, स्पेन, यक्रेन, अरब, जापान, चीन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज के विदेशी मूल के अनेक लोग हिंदी में सक्रिय है। हिंदी कविता गीत भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं। आजकल व्हाट्सऐप्प पर हिंदी कविताओं का चलन बढ़ गया है। जिससे जहां एक और नए रचनाकारों को अपनी योग्यता दिखाने का मौका मिलता है वहीं दूसरी ओर पद्यात्मक भाषा जनमानस में चेतना जगाने का कार्य बखूबी कर रही है। हिंदी में लिखे संदेशों के द्वारा हिंदी के शब्द घर–घर पहुंच रहे हैं। जितना हिंदी के शब्द चलन में आएंगे उतना ही भाषा का विस्तार होगा।

सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग का महत्व–हिंदी भाषा ही नहीं अपितु भारतीयता की पहचान है, भारत देश के जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक एवं परिचायक भी है। भाषा सहज सुगम एवं सबसे वैज्ञानिक होने के साथ–साथ भारत के प्राचीन

पारंपरिक ज्ञान, सभ्यता के विकास तथा आधुनिक प्रगति के बीच में सेतु भी है। वर्तमान राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के अनुसार'' हिंदी अनुवाद की नहीं संवाद की भाषा है''। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। हिंदी को यदि सशक्त बनाना है तो हर क्षेत्र में इसका प्रयोग बढ़ाना होगा। हिंदी का प्रयोग सोशल मीडिया में बढ़ने से आने वाले दिनों में निम्न लाभ होंगे।

1. हिंदी एवं सोशल मीडिया के द्वारा विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जनकल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिक को आसानी से उपलब्ध हो सकेगी जिससे गरीब, पिछड़ा एवं कमजोर वर्ग इससे लाभ उठा कर देश की मुख्य धारा में जुड़ सकेगा।
2. जनजागरूकता बढ़ने वाले कार्यक्रम को इन माध्यमों द्वारा सुगमता से चलाया जा सकता है।
3. एक आम आदमी भी अपनी बात सरकार तक पहुंचा रहा है, जिससे सरकारी तंत्र मे आम जनता की भागीदारी बढ़ने से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जा सकेगा।
4. सोशल मीडिया हिंदी को वह मंच प्रदान करेगा जिससे हिंदी अपने को विश्व स्तर पर पहुंचा सकेगी।
5. सोशल मीडिया तथा यू ट्यूब एवं ब्लाग्स आदि पर हिंदी के प्रयोग के कारण ग्रामीण जनता भी तकनीक से जुड़ कर ज्ञान वर्धक सूचनाएं और स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त कर सकेंगे।
6. सोशल मीडिया एक प्रभावी संचार उपकरण है। इस माध्यम से युवा पीढ़ी जो अब तक अंग्रेजी उपयोग करती थी उनमें भी हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ा है। हिंदी में संवाद स्थापित करने से हिंदी का स्वतः ही विकास हो जाएगा।
7. हिंदी ब्लोगिंग पत्रकारिता के दायित्व का निर्वहन ही नहीं करता अपितु रचनाकारों को अपनी रचनाओं को बिना सम्पादक के सीधे पाठकों तक पहुंचाने की सुविधा प्रदान करता है। जिससे कागज़ रहित पठन सामग्री बढ़ेगी। लेखन को भाव मिलेगा। नाम नहीं अपितु काम को बल मिलेगा। लेखक की सहज अभिव्यक्ति पाठकों तक निशुल्क पहुंच सकेगी।
8. सोशल मीडिया पर हिंदी के विज्ञापनों द्वारा वैश्विक उद्योग जगत अपने उत्पाद को लोकप्रिय बनाने में जुटा है जिससे अन्तोगत्वा भाषा का ही प्रसार होगा।
9. सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी ने तकनीक की दुनिया में अपना स्थान बना लिया है। इससे विश्व में हिंदी भाषा को गंभीरता से अनुभव किया जाएगा।
10. जबसे मोबाइल ऑपरेटिंग तंत्र में हिंदी का प्रवेश हुआ है तब से हिंदी को लिखने, पढ़ने, समझने एवं बोलने वालों की संख्या दिन प्रतिदनि बढ़ रही है। यही कारण है कि हिंदी आज अबाध गति से संसार में छा जाने के लिए तैयार है।

सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग का भाषा पर प्रभाव–भाषा मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग से भाषा का स्वरूप भी बदला है। सोशल मीडिया एकालाप नहीं संवाद है जिससे एक बड़ा वर्ग इससे जुड़ने के कारण पुराने संचार मीडिया सिकुड़ते जा रहे। यहां उपयोगकर्ता या प्रयोगकर्ता ही निर्माता भी है यह इस माध्यम की सबसे बड़ी शक्ति एवं सीमा भी है। सोशल मीडिया की सबसे बड़ी पूँजी इसके उपयोगकर्ता की भारी संख्या है जो दो अरब से भी ज्यादा है। इस मीडिया के अधिकतर उपयोगकर्ता 15 से 24 वर्ष के हैं जिसके कारण युवा पीढ़ी की भाषा शैली प्रभावित हुई है। छवियों के माध्यम से संचार होने के कारण औपचारिक लेखन में भी कमी आई है। व्याकरण आदि पर ध्यान न रखने के कारण भाषा का लालित्य घट रहा है। पारंपरिक व्याकरण के नियम बदल रहे है। हिंदी के मिश्रित स्वरूप का जन्म हुआ है यथा लिपि देवनागरी एवं भाषा हिंदी, लिपि रोमन एवं भाषा हिंदी तथा दोनों भाषाओं एवं लिपियों का मिश्रण एक साथ जिसको हिंगलिश की संज्ञा भी दी जा रही है। हिंदी की परम्परिक कविता विधा के स्थान पर जापानी विधा हाइकु का प्रयोग भी बढ़ रहा है। नई पीढ़ियां पाठ्य पुस्तकों के अलावा कुछ भी गंभीर, स्वास्थ्य, विचारपूर्ण लेखन, साहित्यिक वैचारिक पठन से लगातार दूर जा रही है। अच्छी

असरदार भाषा अच्छी पढ़ने से ही आती है। एवं अच्छी भाषा के बिना गहरा गंभीर विचार वमर्श, चिंतन और ज्ञान निर्माण संभव नहीं।

उपसंहार

हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है यदि हम अन्य भाषा के शब्दों को उदार मन से स्वीकार करेंगे तो इससे हिंदी और भी सशक्त बनेगी। हिंदी के उज्जवल भविष्य के लिए उसका नई तकनीकों से जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी तभी सशक्त बनेगी जब वह व्यापार, रोजगार एवं वैज्ञानिक विकास एवं प्रसार की भाषा बनेगी। सोशल मीडिया ने हिंदी के विकास के लिए एक जमीन निर्मित की है, आवश्यकता है उपयोगकर्ताओं द्वारा भाषा जगत में नई ऊर्जा का संचार करने की जो देश समाज संस्कृति एवं भाषा के लिए उपयोगी हो पूरे भारत में लगभग 30 से 40 हजार हिंदी के शिक्षक हैं अगर सब एक मंच पर ईमानदारी के साथ आ जाएं तो वे हिंदी के स्वरूप को बचाने की एक ताकत बन सकते हैं। हिंदी के उपयोगकर्ता भी यदि विवेक से इसका प्रयोग करे तो वह दिन दूर नहीं जब यूनेस्को की सात भाषाओं में से एक होने का गौरव प्राप्त करने वाली हिंदी विश्व में अपना स्थान प्राप्त करेगी एवं इसके माध्यम से विदेशी भी भारतीय संस्कृति से जुड़ सकेंगे।

सरलता और शीघ्रता से सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है।

–लोकमान्य तिलक